http://www.sgbauonline.com/

B.A. (Part–III) Examination
(Literature of Modern Languages)
HINDI LITERATURE

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 100

1. निम्नांकित पद्यांश की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए :

उस सत्य के आघात से
हैं झनझना उठती शिराएँ प्राण की असहाय-सी
सहसा विपंची पर लगे कोई अपरिचित हाथ ज्यों।
वह तिलमिला उठता, मगर,
है जानता इस चोट का उत्तर न उसके पास है। 10

अथवा

प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त,
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है।
छोड़ प्रतिवैर पीते मूक अपमान वे ही,
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है।
चोट खा सहिष्णु व' रहेगा किस भाँति, तीर
जिसके निषंग में, करों में दृढ़ चाप है।
जेता के विभूषण सहिष्णुता क्षमा हैं, किन्तु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।

2. निम्नांकित गद्यांश की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए :

सब प्रकार के शासन में – चाहे धर्म–शासन हो, चाहे राज-शासन, या सम्प्रदाय–शासन–मनुष्य जाति-के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दण्ड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत शासन चलते आ रहे हैं। इनके द्वारा भय लोभ का प्रवर्तन उचित सीमा के बाहर भी प्राय: हुआ है और होता रहता है। जिस प्रकार शासक-वर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थ-सिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आयें हैं उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप-वैचिपत्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिये भी शासक वर्ग अपने अन्याय और अत्याचार के विरोध की शांति के लिये भी डराते और ललचाते आये हैं। मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिये भी जनता को कँपाते और लपकाते आयें हैं। 10

अथवा

श्रद्धा का मूल तत्त्व है दूसरे का महत्व स्वीकार। अत: जिनकी स्वार्थबद्ध दृष्टि अपने से आगे नहीं जा सकती अथवा अभिमान के कारण जिन्हें अपनी ही बड़ाई के अनुभव की लत लग गई है उनकी इतनी समाई नहीं कि वे श्रद्धा ऐसे पवित्र भाव को धारण करें। स्वार्थियों और अभिमानियों के हृदय में श्रद्धा नहीं टिक सकती। उनका अन्त:करण इतना संकुचित और मलिन होता है कि वे दूसरों की कृति की यथार्थ मूल्य नहीं परख सकते।

3. 'समर निंद्य है परंतु शांति स्थापित करने के लिये युद्ध ही एक मात्र साधन है' – कुरुक्षेत्र के आधार पर स्पष्ट कीजिये। 15

अथवा

"भीष्म पितामह साहस और बलिदान का अतुलित उदाहरण हैं", कुरुक्षेत्र के आधार पर कथन सिद्ध कीजिये।

http://www.sgbauonline.com/

http://www.sgbauonline.com/

4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'देखन में छोटे लगे, घाव करें गंभीर'' इस उक्ति के समान है स्पष्ट कीजिये। 15

अथवा

लज्जा और ग्लानि में क्या अंतर है ? पठित पाठ के आधार पर सविस्तार लिखिये।

5. छायावाद के चार आधारस्तंभों का संक्षिप्त परिचय देते हुये; छायावाद की विशेषताएँ लिखिये। 10

अथवा

प्रगतिवाद की प्रवृत्तियों को सोदाहरण लिखिये।

6. (अ) रस की परिभाषा बतलाते हुये उसके तत्वों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 10

अथवा

हास्य और रौद्र रस को सोदाहरण लिखिये।

(ब) निम्नलिखित अलंकारों को उदाहरण सहित लिखिये : 4

यमक, उपमा।

अथवा

मानवीकरण, श्लेष।

(क) निम्नलिखित छंदों के लक्षण बतलाकर उदाहरण दीजिये : 4

हरिगीतिका, कुंडलियाँ।

अथवा

दोहा, रोला।

(ड) अभिधा **अथवा** व्यंजना शब्द शक्ति को सोदाहरण समझाइये। 2

7. वस्तुनिष्ठ प्रश्न: निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर लिखिये :

(अ) कुरुक्षेत्र से :

(i) स्वयंवर जीतकर द्रौपदी को कौन ब्याहकर लाया था ?

(ii) भरी सभा में दुर्योधन ने किसका वस्त्रहरण किया था ?

(iii) छीनता हो ..... कोई और तु त्याग, तप से काम ले।(रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए)

(iv) कौरव पुत्रों की संख्या थी।

(1) 10 (2) 50 (3) 100

(v) कर्ण की माता का नाम बतलाइये।

(ब) चिंतामणि से :

(i) कंप शीत की संवेदना है। (सत्य/असत्य)

(ii) समस्त मानव जीवन के प्रवर्तक भाव या ..... ही है।

(iii) प्रेम के लिये इतना ही बस है कि कोई मनुष्य हमें ..... लगे। (अच्छा/बुरा/सुंदर)

(iv) लज्जा का हल्का रूप ..... है।

(v) भक्ति रस का पूर्ण परिपाक जैसा ..... में देखा जाता है वैसा अन्यत्र नहीं।

(क) हिन्दी साहित्य के इतिहास से :

(i) प्रेमचंद का वास्तविक नाम ..... था।

(ii) मधुशाला की रचना है। (महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी, हरिवंशराय बच्चन)

(iii) आदिकाल को ..... नाम से भी जाना जाता है।

(iv) 'संसद से सड़क तक' किसकी रचना है ?

(v) कबीर के 'बीजक' की भाषा है। (सधुक्कड़ी, ब्रज, अवधी)

(ड) कांव्यांग से :

(i) हास्य रस का स्थायी भाव लिखिये।

(ii) रस की परिभाषा बतलाइये।

(iii) किसी भी एक शब्द का एक से अधिक अर्थ प्रयुक्त हो वहाँ ..... अलंकार होता है।

(iv) जुगुप्सा का स्थायी भाव है। (घृणा, प्रेम, उत्साह)

(v) व्यंग्यार्थ इस शब्द शक्ति में अभिप्रेत है। 20

http://www.sgbauonline.com/